Impact Factor-7.675 (SJIF) ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Peer-Reviewed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

May -2020

SPECIAL ISSUE-CCXXXIII (233)

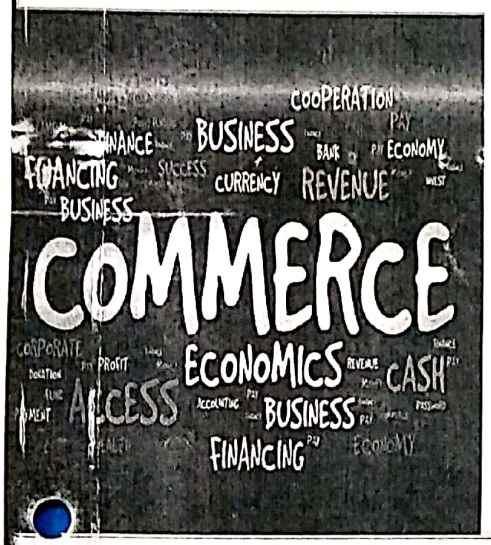

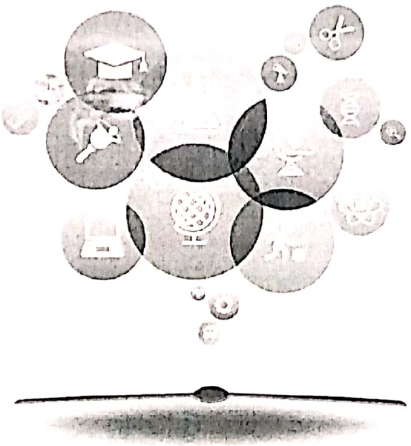

Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Editor:
Dr.Dinesh W.Nichit
Principal
Sant Gadge Maharaj
Art's Comm,Sci Collage,
Walgaon.Dist. Amravati.

Executive Editor:
Dr.Sanjay J. Kothari
Head, Deptt. of Economics,
G.S.Tompe Arts Comm,Sci Collage
Chandur Bazar Dist. Amravati

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

Aadhar Publications

Scanned with OKEN Scanner

18	युवक व युवतींच्या कौशल्य विकासामध्ये प्रशिक्षण घेणे ही आजच्या काळाची आवश्यकता डॉ. माया प्रभाकर शिरखेडकर	74
19	श्री दत्तात्रयांचा प्रथम अवतार श्रीपाद श्रीवल्लभ डॉ. सुनीता पांडे	79
20	कोरोना व ताळेबंदीचा परिणाम एक अध्ययन डॉ संजय साळीवकर	81
21	एकाग्रतेमुळे संकल्पशक्तीची प्राप्ती प्रा. गिरीश गं.गवई	85
22	कोरोना वायरस का संगीत और सांस्कृतिक क्षेत्रपर प्रभाव प्रा. डॉ. प्रसाद मडावी	87
23	बालकाचा बौध्दीक विकास एक अध्ययन प्रा. डॉ. किरण रा. बेलुरकर	92
24	योग स्त्री जीवनाचा मुलभूत आधार प्रा.कु.सारिका भाग्यवान खोब्रागडे	96
25	मंत्री यशपाल कृत 'मोहराजपराजयम्' नाटक में बिम्बयोजना का विवेचन डॉ. ओमकुमार टोम्पे	102
26	अमेरिका व रशियातील शीतयुध्द प्रा.झरेकर रमेश सोनू,	109
27	स्थानीय शासनाच्या विकासात पंचायत राजची भूमिका डॉ. पद्माकर प्रेमदास दारोंडे	112
28	उत्तर हिंन्दुस्थानी संगीत पध्दति मे का रागांग राग बिहाग और बिहाग राग मे स्वरों का प्रयोग एवं महत्व प्रा. नाना ग.जाधव	117
29	राष्ट्रसंताची भजनावली : सामाजिक ऐक्याचा सांस्कृतिक वारसा प्रा. पंडित काळे	121
30	उपशास्त्रीय संगीत प्रकारातील ठुमरी प्रा प्रतिभा चं. पवित्रकार	125
31	लुप्त झालेला संगीत प्रकार खडी गंमत कींवा तमाशा प्रा.शरद गजभिये	128
32	ग्रामिण भागातील बँकींग सेवा सोयी व सुविधा यांचे समीक्षात्मक अध्ययन प्रा.डॉ. जयंत एम. बनसोड	132
33	प्राचीन मराठी वाङ्मयाचे दोन काव्य प्रकार — गोंधळ व पोवाडा डॉ. वंदना प्र. पळसापुरे	136
34	ग्रामीण व शहरी भागातील किशोरवयीन विद्यार्थ्यांच्या भावनिक बुद्धिमत्तेचे तुलनात्मक अध्ययन डॉ. कल्पना ए. शिंदे	142
35	डॉ. रा. चिं. ढेरे यांच्या साहित्य व समीक्षा लेखनामागील प्रेरणा प्रा. मोरे भास्कर निवृत्ती	149
36	नारी मुक्तिदाता प्रा. डॉ. अभिमन्यु नरसिंगराव पाटिल	153
37	महात्मा गांधीजींची शिक्षण विषयक भूमिका प्रा.डॉ. आनंद के. भोयर	156
38	पंतप्रधानांच्या स्वरूपात लाल बहादुर शास्त्री यांचे कार्य व भूमिका स्नेहा विकासराव नागरमोते / डॉ. सौ. अलका विनायकराव देशमुख	159

Scanned with OKEN Scanner

B.Aadhar *International Multidisciplinary Research Journal*
Impact Factor - { (SJIF) -7.675,
Special Issue
ISSN : 2278-9308
May 2020

उत्तर हिंन्दुस्थानी संगीत पध्दति मे का रागांग राग बिहाग और बिहाग राग मे स्वरों का प्रयोग एवं महत्व

प्रा. नाना ग.जाधव
डॉ.एल.डी.बलखंडे कॉलेज ऑफ आटर्स ॲण्ड कॉमर्स पवनी,जि. भंडारा.

उत्तर हिं दन्दुस्थानी संगीत पध्दति मे बोहत रागों के स्वरों का प्रयोग एवं महत्व बताया गया हैं। और उस राग का शास्त्रीय विज्ञान संगीत के पंडीतो ने बोहत अच्छी तरीकोंसे प्रस्तुत कीया हैं। राग बिहाग शास्त्रीय संगीत का सुप्रसिध्द एवं प्राचीन राग है। संगीत के सभी वर्गो के कलाकार एवं श्रोताओं का अत्यन्त प्रिय तथा संगीत की सभी शैलियों के गायन–वादन मे सहज रुप से प्रयोग होने वाला और बिहाग अंग के समस्त प्रकार का रागांग राग है। परंतु जहॉ तक रागांग रागों अर्थात् मूल आश्रय रागो के नियम बरतने की परम्परा की बात है। सभी घरानो मे एक से है। जैसे की बिलावल,कल्याण,खमाज,आसावरी,तोडी,भैरवी,काफी,पूर्वी,मारवा,भैरव,इत्यादि इन रागांग रागों के बरतने का नियम सर्वत्र एक सा है। इसके अलावा कुछ ऐसे भी रागांग राग है। जो इन्हीं मूल रागांग रागों से सम्बन्धित होते हुए भी उनका स्वरुप भिन्न है। जैसे–नट, गौंड मल्हार,कान्हडा,बहार,बिहाग,बागेश्वरी,सारंग,श्री,गौरी,केदार,इत्यादि। परंतु ये सभी उप रागांग राग है। क्योंकि इनमें से कोई भी ऐसा उप रागांग राग नहीं है। जो मुल रागांग राग से सम्बन्धित न हो जैस नट,गौंड मल्हार,बिहाग,इत्यादि, बिलावल से तथा कान्हडा,बहार,सारंग,इत्यादि काफी से,श्री,गौरी,इत्यादि पूर्वी एवं भैरव,से इस प्रकार हम देखते हैं कि उत्तर भारतीय शास्त्रीय में राग गायन,वादन पूर्ण रुप से रागांग रागों पर निर्भर करता है।

राग बिहाग थाट पध्दति के अनुसार यह बिलावल का है। इसमें दोनों मध्यम के अतिरिक्त सभी स्वर शुध्द हैं। यह राग पूर्वांग प्रधान है। यह राग का वादी स्वर गंधार तथा संवादी स्वर निषाद है। गायन समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। मूल स्वरुप इस प्रकार है। — सा,नि़ सा ग, गरेसा, ग म प ग म ग, म ग, रे सा, ग म प निप, प ग म प ध गमग,म गेसा, नि़ सा म ग प ग म प नि, प नि सां नि ध प, ग म प ग म ग,म प म ग रे सा।

बिहाग के उपरोक्त स्वरुप मे किसी अन्य राग का मिश्रण नही दृष्टिगोचर होता है। परंन्तु इसके स्वरुप को ध्यान से देखने पर प्रस्तुत राग बिहाग का मूल श्रोत स्थल बिलावल अवश्य दिखता है। जैसे–ग रे ग प म गे रेसा, ग प नि ध नि सां, सां नि ध प, ध ग प म ग म रे ग प, ध म ग, ग म प म ग रे सा।

बिलावल के इस उपरोक्त स्वर विस्तार के पूर्वांग के स्वर समूह में रिषभ का अल्पत्व तथा गंधार का बहुत्व, इसके अतिरिक्त ग म प म ग रेसा और उत्तरांग के ध ग की संगति इत्यादि लक्षणे बिहाग मे विद्यमान है। इस लक्षण के अतिरिक्त बिहाग के आरोह मे रिषभ–धैवत वर्जित और धैवत के स्थान पर गंधार वादी का सांयकालीन लक्षण उत्पन्न किया जाता है। गंधार का संवादी स्वर धैवत भी हो सकता है। मगर धैवत महत्व को कम करने के लिये निषाद को संवादी माना गया है।

इस प्रकार से सिध्द होता है। कि बिहाग का मूल श्रोत रागांग राग बिलावल है। और यह भी स्पष्ट है। कि बिहाग मे किसी अन्य राग का मिश्रण नही है। वरना बिलावल मे ही स्वंर वर्जित तथा वादी–संवादी एवं स्वंर लगाव इत्यादी भेद करके राग बिहाग का स्वंरुप प्रतिष्ठित होता है। अर्थात बिहाग एक छायालग राग है। जिसमें किसी अन्य राग का मिश्रन नहीं,बल्कि बिलावल राग की छाया आती है। परंतु बिहाग के सुदृढ स्वरुप को देखते हुए विद्यवानों ने इसे रागांग राग

Scanned with OKEN Scanner